GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

"मुघल-ए-आज़म": प्रेम और विद्रोह की सौंदर्यकला।

येशा ठक्कर, डॉ.ऊमा रेले

नालंदा नृत्यकला महाविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ मुंबई।
Email ID- thacker.yeshaphd@gmail.com
Mo. (+91) 9327052645.

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य प्रसिद्ध फिल्म "मुघल-ए-आज़म" के दीर्घकालिक प्रभाव में योगदान करने वाले सांस्कृतिक और कलात्मक सूक्ष्मताओं को सुलझाना है।

पत्र फिल्म के सौंदर्य तत्वों का विस्तृत विश्लेषण करता है, और जाँचता है कि निर्देशक के. आसिफ और रचनात्मक टीम ने "मुघल-ए-आज़म" के दृश्य और कथा तत्वों में भारतीय सौंदर्य परंपराओं को कैसे शामिल किया। इसमें रस और भाव जैसे शास्त्रीय भारतीय अवधारणाओं का अन्वेषण शामिल है और उनका फिल्म की भावनात्मक और दृश्य सौंदर्य में प्रतिस्थापन कैसे होता है उसका अध्ययन किया गया है ।

"मुघल-ए-आज़म" फिल्म अपने शानदार सेट्स, सुंदर वेशभूषा, और भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। अनुसंधान यह जाँचता है कि ये दृश्य सौंदर्य संवेदनशीलता के साथ मुघल काल की भव्यता को कैसे दर्शाते हैं और सांस्कृतिक विषयों से संबंधित प्रतीकात्मक तत्वों को कैसे दृश्यमान करते हैं।

इस अध्ययनमें संगीतीय सामंजस्य और भावनात्मक समर्थता को भी समाविष्ट किया गया है। अध्ययन का केंद्र "मुघल-ए-आज़म" के संगीत पर भी है, विशेषकर अमर "प्यार किया तो डरना क्या" गीत और "मोहे पनघट पे नन्दलाल छेड़ गयो रे" पर।

यह शोध अनुसंधान नौशाद द्वारा की गई शास्त्रीय संगीत और शकील बदायूनी की कविता की प्रतिभा की खोज करता है और संगीत कैसे भावनात्मक समर्थन को बढ़ाता है और फिल्म की सौंदर्यिक आकर्षण में योगदान कैसे करता है वह भी अभ्यास का एक एहम हिस्सा रहेगा।

इस अध्ययन में विद्रोह के रूप में सौंदर्यिक अभिव्यक्ति कैसे हुई है वह भी दर्शाया गया है जहां शहेजादे सलीम और अनारकली के बीचके प्रेम को केंद्र में रखा गया है।

परंपरा और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच एक सूक्ष्म संतुलन को दर्शाते हुए सामाजिक आदर्शों के खिलाफ होने के बावजूद विद्रोह के विषय को सौंदर्यिक रूप से कैसे प्रस्तुत किया गया है वह समाविष्ट किया गया है।

"मुघल-ए-आज़म" के सांस्कृतिक प्रभाव और हिंदी सिनेमा के सौंदर्यिक परिदृश्य पर आधारित इस अनुसंधान में, फिल्म के स्थायी सांस्कृतिक प्रभाव को मूल्यांकन करने का प्रयास है। "मुघल-ए-आज़म" के सांस्कृतिक चयनों की समझ से, यह पत्र भारतीय सौंदर्यशास्त्र और सिनेमाई रूप के अंतर्संबंध में व्यापक अंतर्दृष्टि को उजागर करता है।

शब्दबीज: *भारतीय सौंदर्यशास्त्र, हिंदी सिनेमा, मुघल-ए-आज़म, रस, भाव, सिनेमाई प्रतीकवाद, संगीत सद्भाव, सांस्कृतिक प्रभाव।*

❖ भूमिका

▪ भारतीय सौंदर्यशास्त्र:

भारतीय सौंदर्यशास्त्र एक ऐसा क्षेत्र है जो सौंदर्य की अद्वितीयता और उसके सांस्कृतिक महत्व को समझने का प्रयास करता है। इसे हम "रस", "भाव", और "अलंकार" के माध्यम से व्यक्त करते हैं, जो रूप, भावना और सौंदर्य की अद्वितीयता का संबोधन करते हैं।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र न केवल विश्व कला और संस्कृति के साथ जुड़ा हुआ है, बल्कि यह भारतीय धार्मिक विचारधारा को भी प्रतिस्थापित करता है। इसका उद्दीपन वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, और पुराणों में होता है, जो सृष्टि और सृष्टिकर्ता के साकार और निराकार रूप का विवेचन करते हैं।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र को आकार देने वाले मूलभूत ग्रंथों में से एक "नाट्य शास्त्र" है, जिसका श्रेय ऋषि भरत को जाता

https://www.gapbhasha.org/

है, माना जाता है कि इसकी रचना दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी के आसपास हुई थी। नाट्य शास्त्र एक व्यापक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, जो भारतीय सौंदर्यशास्त्र के विभिन्न पहलुओं के लिए आधार तैयार करता है।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र की महत्वपूर्ण बात यह है कि यह न केवल शृंगार, वीर, हास्य, रौद्र, भयानक, बीभत्स, आदि रसों का विवेचन करता है, बल्कि इसमें जीवन के सभी पहलुओं को समाहित किया गया है। सौंदर्य का अद्भुत अर्थ इसमें छिपा होता है, जो सिर्फ दृष्टि और सुन्दरता से ही नहीं, बल्कि नैतिकता, धर्म, और आत्मा के साथ भी जुड़ा होता है।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र ने भारतीय कला, साहित्य, संगीत, और नृत्य को समृद्ध किया है और इसे आज सराहा जाता है।

❖ **"भारतीय सिनेमा: एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य":**

भारतीय सिनेमा, जिसे आमतौर पर बॉलीवुड कहा जाता है, जो अपने समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक महत्व के कारण वैश्विक सिनेमाई परिदृश्य में एक अद्वितीय और गहरा स्थान रखता है। जिसकी यात्रा दशकों में विकसित हुई है, जो देश की विविध सांस्कृतिक, सामाजिक और कलात्मक बारीकियों को दर्शाती है।

- **भारतीय सिनेमा की उत्पत्ति:**

भारतीय सिनेमा का आरंभ 20वीं सदी की शुरुआत में हुआ, जब 1913 में दादा साहब फाल्के ने अपनी मूक फिल्म "राजा हरिश्चंद्र" को रिलीज़ किया। इससे एक नए युग की शुरुआत हुई जो चलती छवियों के माध्यम से कहानी सुनाने का एक नया तरीका बना।

- **अग्रणी फिल्म निर्माता:**

दादा साहब फाल्के, बिमल रॉय और सत्यजीत रे जैसे फिल्म निर्माताओं ने प्रारंभिक वर्षों के दौरान भारतीय सिनेमा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके योगदान ने फ़िल्मजगत के विकास और प्रयोग की नींव रखी।

- **भारतीय सिनेमा का स्वर्णकाल:**

1950 और 1960 के दशकों को अक्सर भारतीय सिनेमा के स्वर्णकाल के रूप में जाना जाता है, जिसकी पहचान "मदर इंडिया," "प्यासा," और "मुघल-ए-आज़म" जैसी क्लासिक फिल्मों के रिलीज़ से हुई। इस समय के दौरान, निर्देशकों ने विभिन्न विषयों की खोज की और भारतीय सिनेमा को अंतर्राष्ट्रीय माध्यम में मान्यता प्राप्त हुई।

- **सांस्कृतिक विविधता:**

भारतीय सिनेमा देश की अविश्वसनीय सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है। फ़िल्में हिंदी, तमिल, तेलुगु, बंगाली और अन्य विभिन्न भाषाओं में बनाई जाती हैं। प्रत्येक क्षेत्र सिनेमाई कथा में अद्वितीय कहानी कहने की परंपराओं, संगीत, नृत्य रूपों और सांस्कृतिक तत्वों का योगदान देता है।

- **विश्वव्यापी पहुँच:**

भारतीय सिनेमा ने भौगोलिक सीमाओं को पार कर लिया है और वैश्विक स्तर पर व्यापक लोकप्रियता हासिल की है। बॉलीवुड फिल्मों की लोकप्रियता विभिन्न देशों तक बढ़ गई है, जिससे दुनिया के कई हिस्सों में "बॉलीवुड मेनिया" की घटना में योगदान हुआ है।

- **प्रौद्योगिकी प्रगति:**

प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ, भारतीय सिनेमा ने फिल्म निर्माण में अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाया है, जिसमें विशेष प्रभाव, सिनेमैटोग्राफी और ध्वनि डिजाइन शामिल हैं। इससे फिल्मों की दृश्य और तकनीकी गुणवत्ता में वृद्धि हुई है।

भारतीय सिनेमा का सांस्कृतिक मानदंडों और सामाजिक धारणाओं को आकार देने पर गहरा प्रभाव पड़ा है। फ़िल्में अक्सर समाज को दर्पण बनाने, सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने, रूढ़िवादिता को चुनौती देने और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने का काम करती हैं।

❖ **फ़िल्म "मुघल-ए-आज़म": एक उत्कृष्ट परिचय:**

के. आसिफ़ द्वारा निर्देशित सिनेमाई कृति "मुघल-ए-आज़म" फ़िल्म भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण के रूप में मानी जाती है। जो १९६० में प्रकाशित हुई। फिल्म मुग़ल काल की स्थायिता के साथ राजकुमार सलीम और नृत्यशिल्पिनी अनारकली के बीच एक प्रेम कहानी को सारांशित करती है।

https://www.gapbhasha.org/

"मुघल-ए-आज़म" को विशेष बनाने वाली बात इसकी अपूर्व दृश्य सुंदरता, ऐतिहासिक सटीकता, और कथा में गहराई से व्यंग्य डालने में है। फिल्म के भव्य सेट, विस्तृत कॉस्ट्यूम्स, और प्रसिद्ध संवाद इसे दर्शकों की याद में स्थापित कर देते हैं।

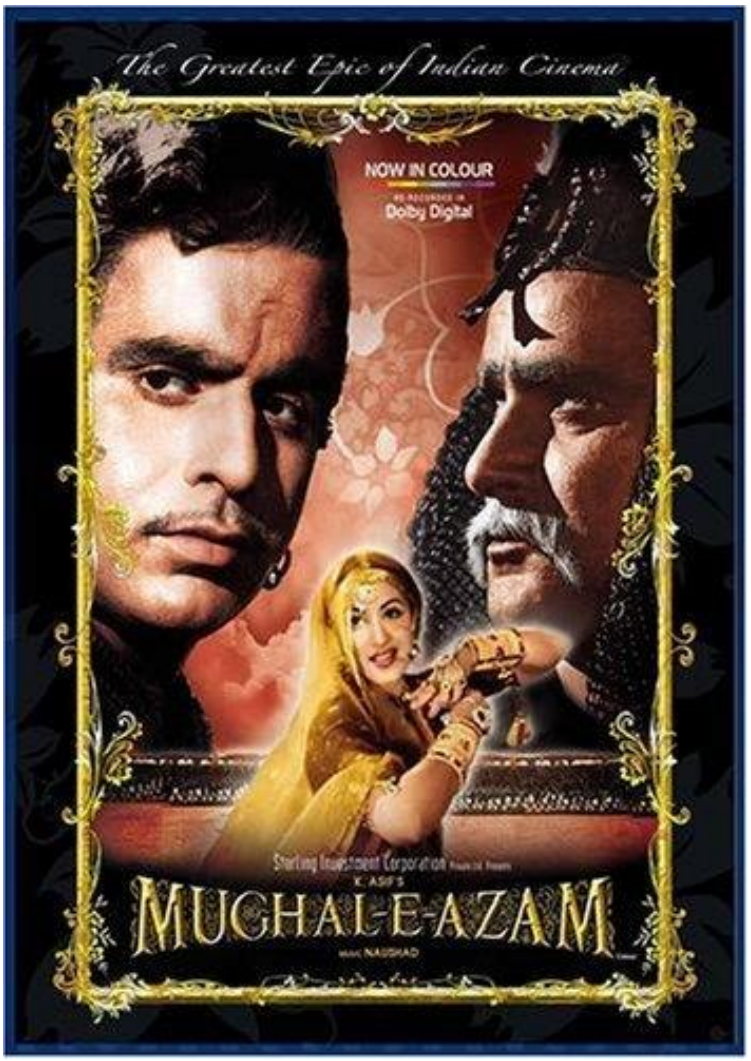

इसमें "प्यार किया तो डरना क्या" जैसे सदाबहार संगीत का समाहार है, जो इसे एक समृद्धि का प्रतीक बनाता है। यह सिनेमा राज, शक्ति, और सामाजिक मानकों के जटिलताओं में एक शिखर को प्रस्तुत करती है।

सिनेमा क्षेत्र के रूप में, "मुघल-ए-आज़म" में इतनी उत्कृष्टता है कि इसे भारतीय सिनेमा के इतिहास में सौंदर्यता का प्रतिक माना जाता है। यह न केवल भारतीय कथा साहित्य को प्रतिष्ठान देता है, बल्कि यह सिनेमा की अविश्वसनीय शक्ति को दिखाकर लोगों को प्रभावित, प्रेरित, और सांस्कृतिक दृष्टि को उत्तेजना करने में भी सक्षम है।

"मुघल-ए-आज़म" की विरासत आज भी गूंजती है, जिससे यह भारतीय सिनेमा कल्पना को बढ़ाता है और इसे भारतीय सिनेमा कल्पना के विकास में एक स्तम्भ के रूप में स्थापित करता है।

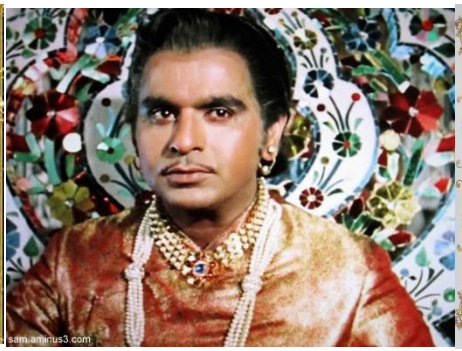

https://www.gapbhasha.org/

❖ **फ़िल्म "मुघल-ए-आज़म" के मुख्य तत्व:**

▪ **शानदार कलाकार:**

फिल्म में प्रभावशाली कलाकार हैं, जिसमें राजकुमार सलीम के रूप में दिलीप कुमार, अनारकली के रूप में मधुबाला, महारानी जोधाबाई की भूमिका में दुर्गा खोटे और सम्राट अकबर के रूप में पृथ्वीराज कपूर जैसे दिग्गज कलाकार शामिल हैं। उनके सशक्त अभिनय ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

▪ **सदाबहार संगीत:**

"मुघल-ए-आज़म" नौशाद द्वारा रचित अपने प्रतिष्ठित और सदाबहार गीत संगीत के लिए जाना जाता है। "प्यार किया तो डरना क्या" और "मोहे पनघट पे" जैसे गाने क्लासिक बन गए हैं और आज भी उनकी संगीत प्रतिभा के लिए लोकप्रिय हैं।

▪ **लुभावनी सिनेमैटोग्राफी:**

आर. डी. माथुर के नेतृत्व में फिल्म की सिनेमैटोग्राफी अपने भव्य सेट, भव्य वेशभूषा और शानदार दृश्यों के लिए उल्लेखनीय है। श्वेत श्याम (Black & White) के समय में टेक्नीकलर के उपयोग ने फिल्म की दृश्य अपील को बढ़ा दिया।

▪ **भारतीय सिनेमा पर प्रभाव:**

तकनीकी प्रगति: "मुघल-ए-आज़म" ने टेक्नीकलर और डॉल्बी डिजिटल साउंड जैसी उन्नत तकनीकों को पेश करके भारतीय सिनेमा में एक महत्वपूर्ण स्थान लिया। इसने प्रोडक्शन डिज़ाइन, सिनेमैटोग्राफी और विशेष प्रभावों के लिए नए मानक स्थापित किए।

▪ **सांस्कृतिक प्रभाव:**

फिल्म ने फैशन, नृत्य और संवाद को प्रभावित करते हुए भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला। "अनारकली, सलीम की मोहब्बत तुम्हें मरने नहीं देगी और हम तुम्हे जीने नहीं देंगे" जैसे संवाद प्रतिष्ठित हो गए और आज भी याद किए जाते हैं।

▪ **बॉक्स ऑफिस पर सफलता:**

"मुघल-ए-आज़म" एक बड़ी व्यावसायिक सफलता थी और अपने समय की सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्मों में से एक बन गई। इसकी सफलता ने भविष्य की फिल्मों के लिए ऐतिहासिक और बृहद शैलियों का पता लगाने का मार्ग प्रशस्त किया।

फिल्म का निर्माण लगभग ₹ १. ५ करोड़ में हुआ था, जिसका मौद्रिक संबंधितता आज की मुद्रा में लगभग ₹ ४० करोड़ के बराबर है।

❖ **फिल्म "मुघल-ए-आज़म" के ऐतिहासिक पहलू:**

▪ **मुघल काल की पृष्ठभूमि:**

"मुघल-ए-आज़म" सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिन्होंने १५५६ से १६०५ तक शासन किया था। मुघल काल को अक्सर भारतीय इतिहास में सबसे गौरवशाली अवधियों में से एक माना जाता है, जिसकी विशेषता फ़ारसी, मध्य एशियाई और भारतीय प्रभावों का समृद्ध सांस्कृतिक मिश्रण है।

▪ **भाषा और शिष्टाचार:**

फिल्म में मुघल काल के दौरान बोली जाने वाली परिष्कृत उर्दू भाषा को शामिल किया गया है, जिससे संवादों में प्रामाणिकता जुड़ गई है। काव्यात्मक भाषा और दरबारी शिष्टाचार का प्रयोग उस काल की सांस्कृतिक परिष्कार को दर्शाता है।

पात्रों के तौर-तरीके और बोलने का तरीका दरबारी व्यवहार के ऐतिहासिक विवरणों के साथ संरेखित होता है, जो फिल्म के सांस्कृतिक यथार्थवाद को बढ़ाता है।

❖ **फिल्म "मुघल-ए-आज़म" में सौंदर्यात्मक तत्व:**

निर्देशक के. आसिफ और प्रोडक्शन डिजाइनर एम. सादिक के नेतृत्व में फिल्म निर्माताओं ने ऐतिहासिक विवरणों पर

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

सावधानीपूर्वक ध्यान दिया, जिसके परिणामस्वरूप मुघल युग की सांस्कृतिक समृद्धि और असाधारणता का आश्चर्यजनक चित्रण हुआ।

- **पोशाकें और आभूषण:**

फिल्म में वेशभूषा और आभूषणों पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिसमें पात्रों द्वारा पहने गए विस्तृत और उत्कृष्ट परिधानों को दर्शाया गया है। विस्तृत डिज़ाइन और जीवंत रंगों का उपयोग मुघल युग की फैशन संवेदनशीलता को दर्शाता है।

पात्रों के शाही आभूषण, जिनमें अलंकृत हार, झुमके और पगड़ी शामिल हैं, उस समय की समृद्धि और सांस्कृतिक सौंदर्यशास्त्र का उदाहरण देते हैं।

सुंदर ड्रेसिंग बनवाई गई थी, जो दिल्ली में बनाई गई और सुरत में सजाई गई।

के. आसिफ़ एक जुनूनी व्यक्ति थे और उन्होंने यह फ़िल्म के निर्माण में कोई कमी नहीं रखी थी और यही इस बात का प्रमाण है की फिल्म के लिए ज्वेलरी हैदराबाद में तैयार की गई थी, मुकुट कोल्हापुर में, हथियार राजस्थान में और जूते आगरा में बनाए गए थे।

युद्ध के दृश्यों में २००० ऊंट, ४००० घोड़े, और ८००० ऐक्स्ट्रा शामिल थे, जिनमें से कुछ वास्तविक सैनिक भारतीय सेना से उधार लिए गए थे।

वेशभूषा मुघल काल की सांस्कृतिक संलयन विशेषता को भी दर्शाती है, जिसमें फारसी और भारतीय डिजाइन तत्व शामिल हैं। यह संलयन न केवल ऐतिहासिक रूप से सटीक है बल्कि सांस्कृतिक आख्यान में जटिलता की एक परत जोड़ता है।

- **असाधारण नृत्य वेशभूषा :**

फिल्म के प्रतिष्ठित नृत्य दृश्यों में असाधारण वेशभूषा शामिल है, विशेष रूप से "प्यार किया तो डरना क्या" के लिए। नृत्य वेशभूषा भव्य मुघल सौंदर्यशास्त्र के साथ पारंपरिक नृत्य रूपों के मिश्रण को प्रदर्शित करती है।

इस गाने में अनारकली द्वारा पहना गया हल्के नीले रंगका सूट बेहद खूबसूरत है। अनारकली का किरदार निभाने वाली मधुबाला द्वारा पहनी गई चमचमाती पोशाक विभिन्न अलंकरणों से भरी हुई थी। फिट किया हुआ ऊपरी आधा भाग और उभरा हुआ निचला आधा भाग कमर पर बुने हुए लाल बेल्ट जैसे कपड़े से विभाजित किया गया था।

इस फिल्म के कॉस्ट्यूम डिजाइन में फिल्म निर्माता को बड़ी संबंधित लागत बरतनी पड़ी थी। विस्तृत वेशभूषा से लेकर निगार टोपी, हाथकमल, घुंघरू, कान-कफ, चोकर्स, कमरबंद, बाजूबंद जैसे कई मोतियों के हार आदि सहायक उपकरण तक सब कुछ प्रामाणिक और सटीक था।

- **सेट डिज़ाइन:**

फिल्म के सेट मुघल वास्तुकला की भव्यता को दोहराते हैं, जिसमें जटिल रूप से डिजाइन किए गए महल, आंगन और शाही कक्ष शामिल हैं। भव्य सेट प्रतिष्ठित शीश महल (दर्पणों का महल) सहित मुगल काल की राजसी संरचनाओं को

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

दर्शाते हैं।

गाने "प्यार किया तो डरना क्या" के निर्माण में उस समय ₹ १० मिलियन का खर्च आया था।

शीश महल सेटिंग को शूट करने के लिए सिनेमैटोग्राफर आर. डी. माथुर को प्रकाशन के साथ प्रयोग करना पड़ा। उन्होंने दर्पणों को मोम से रंगने का प्रयास किया, जो काम कर गया, लेकिन दृश्य भी धुंधले हो गए।

इसके बाद, उन्होंने बाउंस्ड लाइटिंग बनाने के लिए रणनीतिक रूप से कपड़े की पट्टियां रखने की कोशिश की।

इस विशिष्ट सेट ने अपने प्रभावशाली आयामों के लिए ध्यान आकर्षित किया, जिसकी लंबाई १५०फीट, चौड़ाई ८०फीट और ऊंचाई ३५ फीट है।

सेट के अंदरूनी हिस्से जटिल नक्काशी, भित्तिचित्रों और कलात्मक विवरणों से सजाए गए हैं जो मुगल महलों के समृद्ध सौंदर्य को दोहराते हैं। वास्तुशिल्प विवरण पर ध्यान फिल्म की समग्र प्रामाणिकता में योगदान देता है।

- **संगीत और नृत्य:**

"मुघल-ए-आज़म" अपने शास्त्रीय भारतीय संगीत और नृत्य दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। फिल्म में प्रतिष्ठित गाने और प्रदर्शन हैं जो कहानी की सांस्कृतिक समृद्धि में योगदान करते हैं।

पारंपरिक संगीत के साथ-साथ कथक जैसे शास्त्रीय नृत्य रूपों का उपयोग फिल्म की सांस्कृतिक प्रामाणिकता और कलात्मक अपील को बढ़ाता है। मुघल-ए-आज़म

में संगीत सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है, जिसमें विशिष्ट मनोदशाओं और भावनाओं को जगाने के लिए शास्त्रीय रागों और तालों को शामिल किया गया है।

संगीत की बारीकियों और कथा के बीच परस्पर क्रिया फिल्म की गहराई को बढ़ाती है, और परंपरा में निहित एक संवेदी अनुभव प्रदान करती है।

"कहा जाता है कि गीत प्यार किया तो डरना क्या" के संगीत निर्देशक नौशाद की मंजूरी प्राप्त होने से पहले १०५ बार संशोधित किया गया।

ऐतिहासिक सटीकता और कलात्मक रचनात्मकता से प्रभावित फिल्म का दृश्य सौंदर्यशास्त्र, एक सिनेमाई उत्कृष्ट कृति और मुगल वैभव के एक अनूठे चित्रण के रूप में इसकी स्थिति में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

शहंशाह अकबर के दरबार में अनारकली द्वारा शहजादे सलीम से प्यार का कबूलनामा महत्वपूर्ण था।

शकील बदायुनी और नौशाद ने फिल्म के इस महत्वपूर्ण दृश्य के लिए गीत तैयार करने में पूरी रात बिताई।

आधी रात के आसपास, नौशादजी ने हारमोनियम निकाला और एक पुरानी लोक धुन गुनगुनाना शुरू कर दिया जो उन्होंने बचपन में लखनऊ में सुनी थी। बोल थे 'प्रेम कारी चोरी कारी नई.' जब शकील बदायूँनी सुन रहे थे, तो वह अचानक आकर्षक पंक्ति के साथ आए - 'प्यार किया कोई चोरी नहीं की।' कुछ ही मिनटों में उन्होंने अद्भुत शुरुआत के साथ गाना तैयार किया-

'प्यार किया तो डरना क्या'

https://www.gapbhasha.org/

प्यार किया कोई चोरी नहीं की,
चुप चुप आहे भरना क्या
जब प्यार किया तो डरना क्या'

अनारकली और सह-नर्तकियों के दरबार में प्रवेश करने पर शाही माहौल बनाने के लिए 'राग दरबारी' का उपयोग करने का प्रस्ताव रखा गया। बैकग्राउंड स्कोर में कई सितार और सारंगी वादक शामिल थे, जिसका समन्वयन उस्ताद अब्दुल हलीम जाफ़र खान और पंडित राम नारायणने किया।

इस विशेष गीत के लिए बनारस के प्रसिद्ध पखावज वादक रामदासजी को आमंत्रित किया गया था। उस्ताद हफीज अहमद खान, नियाज अहमद खान और फैयाज अहमद खान ने राग दरबारी में एक लघु रचना की रचना और रिकॉर्ड किया। यह संगीत टुकड़ा चार मिनट से अधिक समय तक चला, और मुख्य गीत शुरू होने से पहले माहौल को बदलने के लिए एक अलग योजना बनाई गई थी।

इस गाने की धुन राग 'मेघ' में रची गई है और काफी सपाट और साधारण है।
पंक्ति "छुप ना सकेगा इश्क हमारा चारों तरफ़ हैं उनका नज़ारा" दो बार गाई जाती है, पहले एकल और फिर कोरस में। जब अनारकली की असंख्य छवियाँ सैकड़ों दर्पणों में प्रतिबिंबित होती हैं, तो एक अनारकली की ध्वनि इन छवियों द्वारा गाई गई ध्वनि से कई गुना अधिक हो जाती है। इस प्रभाव को प्राप्त करने के लिए, नौशादजी ने लताजी की आवाज़ में इस पंक्ति को कोरस के साथ और बिना दो बार रिकॉर्ड किया, और फिर दोनों ट्रैक को एक साथ मिलाया। यह इस गीत के फिल्मांकन के उच्चतम बिंदु को प्रकट करता है।
उन दिनों, ध्वनि रिकॉर्डिंग स्टूडियो अल्पविकसित उपकरणों के साथ काफी सामान्य थे। ये रिकॉर्डिंग्स दादर के 'रंग महल' स्टूडियो के फर्स्ट फ्लोर हॉल में हुई थीं। हॉल को छत से लटकाए गए और दीवारों पर लगाए गए मोटे कंबलों की कई परतों का उपयोग करके ध्वनिक उपाय किया गया था। परावर्तित ध्वनि को अवशोषित करने के लिए नारियल के कचरे और सीपियों को फर्श पर फैलाया गया था। लता मंगेशकर के लिए एक विशेष घेरा (शामियाना) बनाया गया था। आश्चर्य की बात यह है कि केवल दो माइक्रोफोन का उपयोग किया गया, एक गायक के लिए और दूसरा ऑर्केस्ट्रा के लिए। आज इस पर विश्वास करना कठिन हो सकता है, लेकिन इसने खूबसूरती से काम किया।
"प्यार किया तो डरना क्या" गीत मुघल-ए-आज़म फिल्म का एक महत्वपूर्ण दृश्य है, जो विस्तृत कथक नृत्य, शास्त्रीय राग काफी संगीत के साथ बीते युग की भव्यता और समृद्धि को प्रदर्शित करता है।
नृत्य में नृत्त (शुद्ध नृत्य) और अभिनय दोनों शामिल हैं।
नृत्यनिर्देशन पंडित श्री लच्छू महाराज जी ने किया है।

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

इस गानेके साथ एसे कई राज़ जुड़े है। उन मैंसे एक महत्वपूर्ण राज़ यह है कि
शहर के मूर्तिकार बी. आर. खेडकर ने गाने के फिल्मांकन में एक छोटी लेकिन महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मधुबाला, जो नृत्यांगना के तौर पर अच्छी नहीं थीं, खासकर जब भ्रमरी (शरीर को घुमाना) की बात आती थी, जिसमें कौशल की आवश्यकता होती थी। गाने की शूटिंग के दौरान एक पुरुष नर्तक, लक्ष्मी नारायण ने अपने चेहरे से मेल खाता हुआ मुखौटा पहनकर इस दृश्य को प्रदर्शन किया।
इस मुखौटे ने इतनी शानदारी से लोगों को भ्रमित किया कि उन्होंने इसे मधुबाला ही मान लिया। खेडकर ने भारत में पहली बार एक रबर मास्क बनाया।

मधुबाला ने अनारकली के रूप में एक अमिट छाप छोड़ी, और "मोहे पनघट पे नन्दलाल छेड़ गयो रे" में राधा का उनका किरदार आज भी फिल्म देखने वालों को मंत्रमुग्ध करता है।
इस गाने में कुल २५ कलाकार नजर आते है।
गाने की शुरुआत १२ नृत्यांगना ओ से होती है जो पलटा लेकर दोनो तरफ से आ रही है। उनका अदभुत नृत्य प्रदर्शन तिहाई से समाप्त होता है जिसका सम बहोत खूबसूरती से दिया गया है।
मधुबाला बीच में बैठी हुई है और आलाप से गीत के मुखड़े की शरुआत होती है।
कसक मसक, गत पलटा, अराल, पताक, हंसास्य जेसी हस्तमुद्राओ का सुंदर उपयोग हुआ है।
राधा कृष्ण की छेड़ छाड़ दिखाई गई है।
सेट की बात करें तो पानी का बहोत ही बड़ा फवारा है जिसके इर्द गिर्द नर्तकियां नृत्य कर रही है और शहंशाह अकबर, जोधा बाई और शहेजादे सलीम इस कृति का आनंद ले रहे है।
इसी गाने से सलीम और अनारकली की प्रेमकहनी की शुरुआत हुई।

ये क्रम कहानी कहने के उपकरण बन जाते हैं, भावनाओं, संघर्षों और पात्रों की यात्रा के महत्वपूर्ण क्षणों को व्यक्त

https://www.gapbhasha.org/

करते हैं।

मुघल-ए-आज़म की अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा ने भारतीय सिनेमा पर वैश्विक ध्यान केंद्रित किया। इस मान्यता ने फिल्म निर्माताओं को अपने कार्यों में अंतरराष्ट्रीय सौंदर्य प्रवृत्तियों और कहानी कहने की तकनीकों को शामिल करने के लिए प्रेरित किया, जिससे एक अधिक महानगरीय दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला।

निष्कर्ष

संक्षेप में, भारतीय सिनेमा सौंदर्यशास्त्र पर मुघल-ए-आज़म का प्रभाव गहरा है।

के. आसिफ की यह सौन्दर्यवादी फ़िल्म बनने तथा दर्शको तक पहोचने में १० साल जितना अधिक समय लगा। इसने न केवल बाद की फिल्मों को प्रभावित किया, बल्कि बॉलीवुड में सौंदर्यवादी प्रवृत्तियों के विकास को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अधिक दृष्टिगत रूप से गतिशील और विषयगत रूप से विविध सिनेमाई परिदृश्य के लिए इस फ़िल्मने मंच तैयार किया।

सन्दर्भ सूची

[1] Chandran, M., & Sreenath V.S. (2021). *An Introduction to Indian Aesthetics*. Bloomsbury Publishing.
[2] Gupta, N. A. (2017). *A student's handbook of Indian aesthetics*. Newcastle upon Tyne, UK: Cambridge Scholars Publishing. Retrieved from https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://www.cambridgescholars.com/resources/pdfs/978-1-4438-9891-1-sample.pdf&ved=2ahUKEwjF_M77up6DAxXo3TgGHQAvAPAQFnoECC8QAQ&usg=AOvVaw2gBKxWe-gbee02GdGRlNws
[3] K S Ramaswami Sastri. (1966). *Indian aesthetics; music and dance*. S.L. Sri Venkateswara University.
[4] सौंदर्य शास्त्र के तत्व Elements of Aesthetics. (1982, May 31). Retrieved December 20, 2023, from INDIAN CULTURE website: http://indianculture.gov.in/ebooks/saaundaraya-saasatara-kae-tatava-elements-aesthetics
[5] A Subaltern Performance: Circulations of Gender, Islam, and Nation in India's Song of Defiance. (2016, March 13). Retrieved December 16, 2023, from Arts and International Affairs website: https://theartsjournal.net/2016/03/13/singh/#_ftnref2
[6] Desk, I. T. N., & News, I. T. (2010, March 4). Bihar Legislators Demand Adoption Of Condemnation Motion. Retrieved December 16, 2023, from www.indiatvnews.com website: https://www.indiatvnews.com/entertainment/bollywood/male-dancer-wore-madhubala-mask-for-pyar-kiya-to-darna-kya-song-1142.html
[7] Is it sunset for Bollywood's magnificent "sets"?. (2011, July 17). Retrieved December 16, 2023, from The Indian Express website: http://www.indianexpress.com/news/is-it-sunset-for-bollywoods-magnificent-sets/818690/0
[8] Music of "Mughal-e-azam." (2010, July 23). Retrieved December 29, 2023, from Scribd website: https://www.scribd.com/document/672752229/mughal-e-azam-english-doc
[9] U, S. Z. (2012). *Houseful The Golden Years of Hindi Cinema*. Om Books International.
[10] Vijayakar, R. (2010, August 6). CELLULOID MONUMENT. Retrieved December 16, 2023, from The Indian Express website: http://www.indianexpress.com/news/celluloid-monument/656505/0http://www.indianexpress.com/news/celluloid-monument/656505/0
[11] Warsi, S. (2009). *Mughal-e-Azam*. Rupa.

चित्रसंदर्भ सुचि

[1] चित्र आकृति १: https://www.imdb.com/title/tt0054098/
[2] चित्र आकृति २: https://www.utsavpedia.com/bollywood-beyond/mughal-e-azam/
[3] चित्र आकृति ३: https://sam.aminus3.com/image/2015-08-31.html
[4] चित्र आकृति ४: https://www.storyltd.com/ItemV2.aspx?iid=38244
[5] चित्र आकृति ५: https://www.indiatvnews.com/entertainment/bollywood/rishi-kapoor-mughal-e-azam-prithviraj-kapoor-dilip-kapoor-madhubala-581857
[6] चित्र आकृति ६: https://twitter.com/IndiaArtHistory/status/1651958120728641536

https://www.gapbhasha.org/

[7] चित्र आकृति ७:https://in.pinterest.com/princepaulalunkal/mughal-e-azam/

[8] चित्र आकृति ८: https://twitter.com/BombayBasanti/status/929346454073815040

[9] चित्र आकृति ९: https://www.cinechittha.com/2020/08/mughal-e-azam-iconic-song-pyaar-kiya-to-darana-kya-story-and-k-asif.html

[10] चित्र आकृति १०: https://www.dailymotion.com/video/x2yt821

https://www.gapbhasha.org/